# Capacity Building Programme

## क्षमता संवर्धन कार्यक्रम

## हिन्दी कार्यशाला

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के उत्कृष्टता केंद्र द्वारा दसवीं कक्षा के हिंदी पाठ्यक्रम हेतु एक क्षमता संवर्धन कार्यशाला का आयोजन 28 जुलाई एवं 29 जुलाई 2022 को सीबीएसई के उत्कृष्टता केंद्र (पूर्वी क्षेत्र), पटपड़गंज में किया गया। कार्यशाला में विद्यालय की हिंदी की अध्यापिकाओं डॉ. शिखा शर्मा तथा काजल सोनी ने भाग लिया। यह कार्यशाला केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के दो विशेषज्ञों डॉ. निरुपमा सिंह तथा श्री अरविंद कुमार झा के निर्देशन में हुई। इस दो दिवसीय कार्यशाला में विविध विद्यालयों से आए लगभग 50 शिक्षक–शिक्षिकाओं ने भाग लिया। कार्यशाला में हिन्दी शिक्षण के विविध पहलुओं पठन, वाचन तथा मूल्यांकन आदि पर चर्चा करने के साथ दसवीं कक्षा के हिंदी पाठ्यक्रम में शामिल विविध विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई।

कार्यक्रम का आरंभ बोर्ड के उपसचिव श्री एल. एल. मीणा द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। अपने संबोधन में श्री मीणा ने कहा कि सभी हिन्दी शिक्षकों को मानक हिंदी वर्तनी की जानकारी के लिए केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' अवश्य रखनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी शिक्षकों को स्वयं पर गर्व महसूस करना चाहिए कि वे हिन्दी भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

कार्यशाला के आरंभ में श्री अरविंद कुमार झा ने हिन्दी शिक्षण के विविध पहलुओं पर चर्चा करते हुए बताया कि पुस्तक–पठन शिक्षण की एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। इसके लिए मौन–पठन आवश्यक है। शिक्षक के आदर्श वाचन के पश्चात विद्यार्थियों को मौन–पठन का अवसर अवश्य देना चाहिए। विषय की ग्राह्यता सुनिश्चित करने के लिए रोल प्ले, वाद–विवाद, भाषण आदि गतिविधियाँ करवाई जानी चाहिए। सप्ताहांत गतिविधि का शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसके लिए कविता याद करने के लिए देना, कोई कहानी पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखना, एक पंक्ति देकर दूसरी पंक्ति ढूँढ़ कर पूरी करने जैसी गतिविधियाँ दी जा सकती हैं। शुद्ध वर्तनी के प्रयोग की योग्यता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिदिन कुछ शब्दों का अभ्यास करवाया जाना चाहिए। एक अन्य गतिविधि 'मैं संपादक हूँ' करवाई जा सकती है, जिसमें दिए गए गद्यांश में अशुद्ध वर्तनी वाले शब्द छाँटकर विद्यार्थी उसके शुद्ध रूप लिखने का अभ्यास कर सकते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में 'र' के विविध प्रयोगों तथा ड़ तथा ढ़ के उच्चारण एवं प्रयोग में अंतर अच्छी तरह समझाया जाना चाहिए।

शिक्षा में नवाचार को प्रोत्साहित करने तथा विद्यार्थियों की रुचि कक्षा में बनाए रखने के लिए विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं में प्रतिदिन किसी नई गतिविधि के साथ कक्षा में प्रवेश करना चाहिए। साहित्य

को नवाचार से पढ़ाने के लिए जो पाठ पढ़ाने जा रहे हैं उसके एक पात्र के रूप में कक्षा में प्रवेश किया जा सकता है। विशेषज्ञों का यह भी मानना था कि कविता पढ़ाते समय कविता की व्याख्या करना आवश्यक नहीं होता, केवल कठिन शब्द बताना ही पर्याप्त होता है। व्याख्या विद्यार्थी स्वयं कर सकते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा पद्धति विद्यार्थी–केंद्रित होने के कारण शिक्षकों को परंपरागत शिक्षण पद्धतियों के दायरे से बाहर आकर नई एवं भिन्न शिक्षण तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए। कक्षा प्रबंधन में अत्यंत कौशल तथा चतुराई दिखानी चाहिए तथा हर विषय की कक्षा में बच्चों के बैठने की व्यवस्था भिन्न होनी चाहिए।

कार्यशाला के दूसरे दिन विशेष रूप से नवीं तथा दसवीं कक्षा के हिंदी के पाठ्यक्रम में शामिल विषयों पर चर्चा की गई। साहित्य के अंतर्गत गद्य तथा पद्य शिक्षण विधियों पर चर्चा करते हुए बताया गया कि दसवीं कक्षा में जिन बच्चों को पढ़ने में कठिनाई होती है केवल उनसे ही पुस्तक पठन करवाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों के सुनने, बोलने, लिखने तथा पढ़ने के कौशल का मूल्यांकन करते समय उनके स्तर का निर्धारण एक, दो, तीन, चार के स्केल के आधार पर करना चाहिए। प्रत्येक लेखक और कवि की रचना में कोई एक पंक्ति होती है जो उसकी आत्मा होती है, उसे पहचानने का अभ्यास करवाया जाना चाहिए। प्रत्येक पाठ के पाँच मुख्य बिंदु लिखवाने चाहिए जिससे बच्चे उस पाठ को भली–भाँति समझ सकें। व्याकरण में शामिल विविध विषयों जैसे समास, मुहावरे, वाक्य–भेद अनुच्छेद लेखन, विराम चिह्न आदि के अभ्यास के लिए विविध गतिविधियाँ सुझाई गईं, जैसे एक ऐसा अनुच्छेद लिखना जिसमें सभी समासों का प्रयोग हो। शब्द तथा पद में अंतर समझाने के लिए प्रत्येक बच्चे को एक–एक शब्द दे दिया जाए। उन्हें बताया जाए कि शब्द जब वाक्य में आए आ गए 'पद' बन गए, वाक्य से निकल गए 'शब्द' बन गए। अनुच्छेद लेखन सिखाने के लिए दस वाक्य दस बच्चों को दे दिए गए। एक–एक वाक्य पढ़ने पर एक–एक बच्चा बाहर आता गया। बाद में सब ने मिलकर अनुच्छेद पढ़ दिया। इसी भाँति विराम चिह्नों को भी गतिविधि के माध्यम से आसानी से समझाने की विधि बताई गई।

कार्यशाला के अंतिम सत्र में शिक्षकों के समूहों से एक गतिविधि भी करवाई गई जिसमें सभी समूहों को चार चित्र दिखाए गए, जिनमें मानव की गतिविधियों के पृथ्वी पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव का चित्रण था। सभी समूहों को चित्र देखकर अलग–अलग गतिविधि करने के लिए दी गई जैसे–कविता लेखन, विज्ञापन लेखन, सूचना लेखन, नाट्य रूप में प्रस्तुति आदि। शिक्षकों ने अपने सृजनात्मक कौशल का प्रयोग कर कार्यक्रम को जीवंत बना दिया। कार्यशाला में श्रवण एवं वाचन कौशल से जुड़ी विविध गतिविधियों की भी जानकारी दी गई। संपूर्ण रूप में कहा जा सकता है कि कार्यशाला अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा रुचिपूर्ण थी तथा इससे अनेक ऐसी जानकारियाँ मिलीं जिनसे शिक्षण को प्रभावी बनाने में मदद मिलेगी।

कार्यशाला के अंत में उत्कृष्टता केंद्र दिल्ली के निदेशक द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।